दशपर्णी अर्क सभी तरह के रस सूचक कीट और सभी इल्लियों के नियंत्रण के लिए

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1.	पानी	200 लीटर
2.	गो-मूत्र	20 लीटर
3.	करंज, अंड, सीताफल बेल, गेंदा, तुलसी, धतूरा, आम, आक के पते	2 कि.ग्रा.
4.	गाय का गोबर	2 कि.ग्रा.
5.	तीखी हरी मिर्च	1 कि.ग्रा.
6.	हल्दी पाउडर	500 ग्राम
7.	हींग	10 ग्राम
8.	अदरक	500 ग्राम
9.	नीम के पते	5 कि.ग्रा.
10.	देशी लहसुन की चटनी	1 कि.ग्रा.
11.	सौंठ पाउडर	200 ग्राम

विधि : गोबर व मूत्र को पानी में अच्छी प्रकार घोल कर 2 घंटे के लिए रख दें। हल्दी का पाउडर, अदरक की चटनी व हींग के पाउडर को अच्छी प्रकार मिलाकर 24 घंटे के लिए छाया में रखें। इस मिश्रण को हिलाकर, सोंठ पाउडर, तम्बाकु का पाउडर, तीखी मिर्च व देसी लहसुन अच्छी प्रकार मिलाकर 24 घंटे के लिए रख दें। पौधों के पत्तों को इस मिश्रण में रख दें व इसको सुबह–शाम घोलें। 6–8 लीटर अर्क को 200 लीटर पानी में मिलाकर एक एकड़ की फसल में छिड़काव करें। दशपर्णी अर्क का छिड़काव दोपहर के बाद करने से अधिक लाभ मिलेगा। दशपर्णी अर्क को घोलते समय नाक पर रूमाल जरूर रख लें। दशपर्णी अर्क बनाने के दौरान तथा भंडारण स्थान को बच्चों तथा गाय–बैल इत्यादि की पहुंच से दूर रखें।

इसको छः माह तक प्रयोग कर सकते हैं।

अग्नेयास्त्र रस चूसने वाले कीड़े, छोटी सूंडी/ इल्लियों के लिए उपयोगी)

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1.	स्थानीय पौधों में से किसी एक के पते	5 कि.ग्रा.
2.	गो-मूत्र	20 लीटर
3.	तम्बाकू पाउडर	500 ग्राम
4.	तीखी हरी मिर्चकी चटनी	500 ग्रा.
5.	देशी लहसून की चटनी	250 ग्रा.

विधि : पतीले में कूटे हुए पत्ते, तम्बाकू पाउडर, मिर्च की चटनी व लहसून की चटनी को गौमूत्र में मिलाकर धीमी आंच पर एक उबाल आने तक गर्म करें। 48 घंटे के लिए रखें। सुबह–शाम घड़ी की सुई की दिशा में 2–3 मिनट तक घोलें। 5 ली. अग्निस्त्र 200 लीटर पानी में डाल कर 1 एकड़ में छिड़काव करें।

इसको 3 महीने के अंदर उपयोग कर लेना चाहिए।

स्थानीय रूप से उपलब्ध पौधे

जैसे कि दरेक, लेन्टाना, भांग, बरेयां, बिच्छूबूटी, बसूटी, वाणा, कढ़ी पता इत्यादि

सप्त धान्यांकुर अर्क

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1.	तिल	100 ग्राम
2.	मूंग दाल, उड़द दाल, लोबिया मोठ व चने के बीज	प्रत्येक 100–100 ग्राम
3.	गेहूं के बीज	100 ग्राम

विधि : एक कटोरी में तिल के बीजों को थोड़े पानी में रातभर भिंगाकर रखें। दूसरे दिन उपरोक्त बीजों को मिलाकर रातभर के लिए पानी में भिंगोकर रख दें। तीसरे दिन सातों प्रकार के बीजों को पानी से निकालकर एक पोटली में बांध कर घर के अंदर टांग दें व पानी को सुरक्षित रख दें। फिर बीजों के अंकुरित होने के उपरांत सभी बीजों को पीस कर चटनी की तरह बना लें। 200 लीटर पानी, 10 लीटर गो–मूत्र व बीजों का सुरक्षित पानी का मिश्रण तैयार करें। इसमें हाथों की सहायता से सातों प्रकार के बीजों की चटनी को लकड़ी के डंडे की सहायता से मिला दें। घोल तैयार होने के बाद इसको बोरी से ढंक कर दो घंटे तक रखें। इसके बाद इसको कपड़े से छान लें। इस प्रकार सप्त–धन्यांकर अर्क उपयोग के लिए तैयार है। इस अर्क को 48 घंटे के अंदर–अंदर उपयोग करें। फसल में इसका उपयोग दानों की दुग्धवस्था में, बाल्यावस्था (छोटी फलियों) में तथा फूलों की फसल में कली अवस्था में करें।

लाभ

- सप्त–धान्यांकुर अर्क छिड़कने से दानों पर चमक आती है।
- फलों का गिरना बंद होता है।
- फली में दाने पूरे भरते हैं।
- दानों का आकार व भार बढ़ता है।
- दानों में सुगन्ध बढ़ती है।
- प्राकृतिक आपदाओं को सहन करने की शक्ति बढ़ती है।

विशेष : गोबर एवं गोमूत्र

केवल देसी गाय के गोबर का उपयोग करें। आधा गोबर बैल का मिला सकते हैं लेकिन अकेले बैल का गोबर नहीं होना चाहिए। जर्सी और होल्स्टीन का मूत्र एवं गोबर वर्जित है। गोबर जितना ताजा एवं गौमूत्र जितना पुराना होगा उतना ही अच्छा होगा। जो गाय दूध नहीं देती है उसका गोबर व मूत्र उतना ही अधिक प्रभावशाली होता है।

संकलन एवं संपादन :

1. डा. राजीव कुमार, वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान, पलामू
2. श्री उदय कुमार सिंह, वैज्ञानिक (सस्य)
3. ई0 विनोद कुमार पाण्डेय, वैज्ञानिक (कृषि अभियंत्रण)

मार्गदर्शन :

डा0 (श्रीमती) रेखा सिन्हा
निदेशक प्रसार शिक्षा, रांची, झारखण्ड

प्राकृतिक खेती

प्रसार पुस्तिका सं0 01/2026-27

कृषि विज्ञान केन्द्र, पलामू

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय
राँची, झारखण्ड

Scanned with OKEN Scanner

प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती पद्धति से फसलों को उगाने में किसी भी प्रकार की रासायनिक खादों, कीटनाशकों इत्यादि के प्रयोग के बिना सफल एवं सतत् खेती कर किसान जहर मुक्त खाद्यान्न का उत्पादन कर सकता है। इस तरह वह खेती में उत्पादन लागत को बहुत ही कम या शून्य कर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को बढ़ा सकता है। साथ ही समाज के अन्नदाता के रूप में स्वस्थ भोज्य पदार्थ उपलब्ध करवा कर स्वस्थ भारत–समृद्धि परिवेश के स्वप्न को भी साकार करने में अपनी सार्थक भूमिका अदा कर सकता है।

मुख्य फसल की लागत का मूल्य अर्न्तवर्ती/सह फसल के उत्पादन से निकाल लेना और मुख्य फसल शुद्ध मुनाफे के रूप में लेना ही प्राकृतिक खेती है। इसमें खेती के लिए आवश्यक कोई भी संसाधन बाजार से नहीं खरीदना है। इन सभी संसाधनों या आदानों की निर्मिती घर में, खेत में या गांव में ही की जाती है।

प्राकृतिक खेती क्यों एवं इसके लाभ :

1. बाजार पर कोई निर्भरता नहीं। खेती में आवश्यक सभी इनपुट या तो गांव में उपलब्ध हैं या घर पर ही तैयार किए जा सकते हैं।
2. रासायन आधारित तत्वों का खेती में प्रयोग न करना। पर्यावरण, मिट्टी और जल प्रदूषण पर नियंत्रण। यह प्राकृतिक वनस्पतियों और जीवों कां संरक्षित करता है।
3. मृदा की उर्वरता, मिट्टी के जैविक पदार्थ और निट्टी में कार्बन की बहाली करना। इस पद्धति से मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की संख्या बढ़ती है और स्वदेशी गाय के गोबर और मूत्र आधारित सूत्र ही प्राकृतिक खेती की कुंजी है।
4. कीट प्रबंधन के लिए वनस्पतियों और प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग से खेती की लागत को कम किया जा सकता है।
5. यह स्थानीय बीजों के उपयोग को बढ़ावा देती है जो स्थानीय वातावरण के अनुकूल हैं।
6. अंतर–फसल और बहु फसल : कम अवधि वाली अंतर–फसल से होनेवाली आय मुख्य फसल के लिए किसानों को कार्यशील पूंजी प्रदान करती है और किसानों की आय को बढ़ाती है।
7. बहु–फसल कृषि मॉडल में पेड़ों को शामिल करने से सालभर आय मिलने के साथ जोखिम भी कम हो जाता है। इससे निरंतर हरा आवरण मिट्टी की उर्वरता में सुधार करता है। इसमें आच्छादन होता है और पानी को नुकसान भी कम होता है।
8. प्राकृतिक खेती में कम पानी की जरूरत : आच्छादन और वापसा जल उपयोग क्षमता को बढ़ाता है तथा भू–जल आवश्यकताओं को कम करता है।
9. प्राकृतिक खेती के तहत फसलें सूखे के दौरान भी लंबे समय तक बेहतर तरीके से खड़ी रहती है और भारी बारिश का सामना भी अच्छे से कर सकती है।
10. जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष में प्राकृतिक कृषि पद्धति सबसे अधिक जलवायु हितैषी है।

प्राकृतिक खेती के मुख्य पाँच स्तम्भ :

बीजामृत : देशी गाय के गोबर और मूत्र से तैयार होनेवाला अनंत करोड़ सूक्ष्म जीवाणुओं का घोल जिससे बीजों को संस्कारित किया जाता है।

जीवामृत : अनंत करोड़ सूक्ष्म जीवाणुओं का उत्तम जामुन जिसे देशी गाय के गोबर और मूत्र से तैयार किया जाता है।

आच्छादन : फसलों के बचे हुए अवशेषों को मिट्टी के ऊपरी परत पर बिछाकर पानी को वाष्पित होने से रोकता है और मिट्टी में हयुमस का निर्माण करता है।

वाफ्सा : मिट्टी के अंदर एक ऐसा अनुकूल वातावरण तैयार करना जिसमें पानी और हवा के कणों की मात्रा एक सम्मान रखी जाती है।

सह–फसल : मुख्य फसल की लागत का मूल्य अन्तर्वर्ती/ सह फसल के उत्पादन से निकाल लेना और मुख्य फसल शुद्ध मुनाफे के रूप में लेना।

बीजामृत (100 कि.ग्रा. बीज के लिए)

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1.	पानी	20 लीटर
2.	गो–मूत्र	5 लीटर
3.	गोबर	5 कि.ग्रा.
4.	अनबुझा चूना	50 ग्राम
5.	खेत के मेड़ या जंगल की मिटी	50 ग्राम (1 मुट्ठी)

विधि : इन सभी सामग्रियों को अच्छी तरह से ड्रम में घोलें। इस घोल को 24 घंटे बोरी से ढंक कर छांव में रखने के बाद बीजों को संस्कारित करें। ध्यान रहे इस दौरान इस घोल को सुबह–शाम 2–2 मिनट घोलना है।

बुआई के 24 घंटे पहले शोधन करना चाहिए।

जीवामृत (1 एकड़ भूमि के लिए)

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1.	पानी	200 लीटर
2.	गो–मूत्र	10 लीटर
3.	गोबर	10 कि.ग्रा.
4.	गुड़या मीठेफलोंका गुद्दा	1 कि.ग्रा.
5.	बेसन या किसी भी दलहन का आटा	1 कि.ग्रा.
6.	खेत के मेड़ या जंगल की मिट्टी	50 ग्राम (1 मुट्ठी)

विधि : इन सभी सामग्रियों को अच्छी तरह से ड्रम में घोलें। इस घोल को घड़ी की सुई की दिशा में 2–3 मिनट तक घोलें। ड्रम को बोरी से ढंक कर 72 घंटे तक छांव में रख दें। सुबह शाम 2–2 मिनट घोलें।

इस घोल का उपयोग 10 दिन के अंदर करें।

धनजीवामृत (1 एकड़ भूमि के लिए)

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1.	गो–मूत्र	आवश्यकतानुसार
2.	गोबर	200 कि.ग्रा.
3.	गुड़या मीठेफलोंका गुद्दा	1 कि.ग्रा.
4.	बेसन या किसी भी दलहन का आटा	1 कि.ग्रा.
5.	खेत के मेड़ या जंगल की मिट्टी	50 ग्राम (1 मुट्ठी)

विधि : गाय के गोबर को किसी पक्के फर्श पर फैलाएं फिर इसके बाद गुड़ या फलों का गुदा व बेसन को डालें। अब मेंढ़ की मिट्टी के साथ गो–मूत्र भी मिला लें। अब सामग्रियों को फावड़े से मिलाएं फिर 2–4 दिन तक छायादार स्थान में सुखाएं। अच्छी तरह सुखाने और बारीक करने के बाद खेत में उपयोग करें।

इसका उपयोग एक साल तक किया जा सकता है।

फसल सुरक्षा प्राकृतिक कीटरोधक

नीमास्त्र (1 एकड़ भूमि के लिए)

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1.	पानी	100 लीटर
2.	गो–मूत्र	5 लीटर
3.	गोबर	1 कि.ग्रा.
4.	नीम या स्थानीय रूप से उपलब्ध पौधों में से किसी एक की हरी पत्तियाँ या सूखे फल	5 कि.ग्रा.

विधि : ड्रम में नीम की पत्तियों की चटनी, और गोमूत्र व गोबर डालें। इन सभी सामग्रियों को डंडे से घोलकर जूट की बोरी से ढंक दें। इस निश्रण को 48 घंटे के लिए छोड़ दें और इस दौरान सुबह–शाम 2–2 मिनट घोलें। तैयार होने के बाद इसका छिड़काव करें।

नीमास्त्र का प्रयोग छह माह तक कर सकते हैं।

ब्रह्मस्त्र (बड़ी सूंडियों/इल्लियों के लिए उपयोगी)

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1.	गो–मूत्र	20 लीटर
2.	अ आम, अमरूद, अंडी के पतों की चटनी ब. स्थानीय पौधों में से किसी दो के पत्तों की चटनी	2–2 कि.ग्रा.

विधि : पत्तों की चटनी को गोमूत्र में डालकर धीमी आंच पर एक उबाल आने तक गर्म करें। 48 घंटे तक ठंडा होने के लिए रख दें। 2.5–3 लीटर घोल को 200 लीटर पानी में मिला कर 1 एकड़ फसल पर छिड़काव करें।

नीमास्त्र का प्रयोग छह माह तक कर सकते हैं।

फफूंदनाशक (फफूंद नियंत्रण के लिए उपयोगी)

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा
1.	पानी	200 लीटर
2.	खटा लस्सी (4–5 दिन पुरानी)	5 लीटर

विधि : पानी व खट्टी लस्सी को अच्छी प्रकार से मिलाकर 1 एकड़ छिड़काव करें।

नोट : यह विषाणु (वायरस) नाशक भी है।

Scanned with OKEN Scanner